6 भरत

W4J3H1

राजा लक्ष्मण सिंह

1926 में आगरा में जन्मे राजा लक्ष्मण सिंह हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, फारसी, बंगला और अरबी भाषा भली भाँति जानते थे। इनकी अनेक पुस्तकों का अंग्रेजी और हिन्दी में अनुवाद हुआ है। कालिदास के 'अभिज्ञान शाकुंतलम', 'मेघदूत' और 'रघुवंश' के हिन्दी अनुवाद पर इन्हें पुरस्कार दिया गया।

कालिदास द्वारा लिखित मूल नाटक 'अभिज्ञानशाकुंतलम्' का हिन्दी में अनुवाद राजा लक्ष्मण सिंह ने किया था। प्रस्तुत पाठ उसी नाटक का एक अंश है। ऋषि कण्व के आश्रम में शकुंतला का पुत्र भरत एक सिंह शावक के साथ खेल रहा है। आश्रम में रहनेवाली दो तपस्विनियाँ बालक को रोकने का प्रयत्न कर रही हैं। राजा दुष्यंत छुपकर इस मनोहर दृश्य का आनंद ले रहे हैं। बालक के प्रति सहज आकर्षण से वे रोमांचित हैं। उनसे रहा नहीं गया और वे बालक के पास पहुँच गए। उसे गोद में उठाकर प्यार किया। वे सोचने लगे – काश ! यह बालक मेरा पुत्र होता ! दोनों तपस्विनियों की बातचीत से उन्हें पता चला कि यह बालक उन्हीं का पुत्र है। यह जानकर वे खुशी से झूम उठे।

पात्र : बालक – भरत राजा – दुष्यंत
तपस्विनी – पहली तपस्विनी – दूसरी

दृश्य

एक बालक सिंह के बच्चे को घसीटते हुए लाता है और दो तपस्विनियाँ उसे रोकती हुई आती हैं। राजा दुष्यंत पेड़ की ओट से उन्हें देख रहे हैं।

बालक : अरे सिंह ! तू अपना मुख खोल, मैं तेरे दाँत गिनूँगा।

पहली तपस्विनी : ए हठीले बालक ! तू वन के इन पशुओं को क्यों सताता है ? हम तो इन पशुओं को बाल–बच्चों के समान रखती हैं। तेरा साहस बढ़ता ही जाता है। तेरा नाम ऋषियों ने सर्वदमन रखा है, सो ठीक ही है।

दुष्यंत : (उनकी बातें सुनकर, स्वयं से) अहा, क्या कारण है कि मेरा स्नेह इस बालक की ओर उमड़ा–सा आता है ?

दूसरी तपस्विनी : जो तू इस बच्चे को छोड़ न देगा तो, सिंहनी तुझ पर दौड़ेगी।

बालक : (मुस्कराकर) ठीक है, सिंहनी का मुझे ऐसा ही डर है ! (मुँह चिढ़ाता है।)

दुष्यंत : (आश्चर्य से) यह बालक अवश्य किसी तेजस्वी वीर का पुत्र है। इसका मुख अग्नि के समान दमक रहा है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

पहली तपस्विनी : हे प्यारे बालक, सिंह के बच्चे को छोड़ दे। मैं तुझे खिलौना दूँगी।

बालक : (हाथ पसारकर) पहले खिलौना दे दो। लाओ, कहाँ है ?

दुष्यंत : (दूर से बालक की हथेली को देखकर, स्वयं से) आहा! इसके हाथ में चक्रवर्तियों के लक्षण हैं। उँगलियों पर कैसा अद्‌भुत जाल है, और हथेली की शोभा प्रातः कमल को भी लज्जित कर रही है।

दूसरी तपस्विनी : हे सखी सुव्रता, यह बातों से न मानेगा। जा, मेरी कुटिया में ऋषिकुमार के खेलने के लिए मिट्टी का मोर रखा है, उसे ले आ।

पहली तपस्विनी : मैं अभी लिए आती हूँ। (जाती है।)

बालक : तब तक मैं इसी सिंह के बच्चे के साथ खेलूँगा। (यह कह कर तपस्विनी की ओर देखकर हँसता है।

दुष्यंत : (आप ही आप) इस सुंदर बालक से खेलने को मेरा मन कैसा ललचाता है! (आह भरकर) धन्य हैं वे मनुष्य ! जो अपने पुत्रों को गोद में लेकर उनेक अंग की धूलि से अपनी गोद मैली करते हैं और पुत्रों के मुख अकारण हँसी से खुलकर, उज्ज्वल दाँतों की शोभा दिखाते और तुतले वचन बोलते हैं।

दूसरी तपस्विनी : क्यों रे ढीठ, तू मेरी बात कान नहीं धरता ?
(इधर-उधर देखकर) कोई ऋषिकुमार यहाँ हैं ?
(दुष्यंत को देखकर) हे महात्मा! तुम्हीं आओ और कृपा करके इस बली बालक के हाथ से सिंह के बच्चे को छुड़ाओ।

दुष्यंत : अच्छा ! (बालक के पास जाकर और हँसकर) हे ऋषिकुमार, तुमने तपोवन के विरुद्ध यह आचरण क्यों सीखा है जिससे तुम्हारे कुल की लाज जाती है। यह तो कोई अच्छी बात नहीं।
(बच्चे ने सिंह के बच्चे को छोड़ दिया)

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

दूसरी तपस्विनी : हे बड़भागी, यह ऋषिकुमार नहीं है।

दुष्यंत : सत्य है, उसके काम ही ऐसे साहस के हैं। यह ऋषिकुमार नहीं जान पड़ता। परंतु मैंने तपोवन में वास देख इसे ऋषिपुत्र जाना था।

(बच्चे की हथेली को अपने हाथ में लेकर स्वयं से।)

अहा ! जब इसका हाथ छूने से मुझे इतना सुख हुआ है तो जिस बड़भागी का यह बेटा है, उसे कितना हर्ष होता होगा!

दूसरी तपस्विनी : (दोनों की ओर देखकर) बड़े अचंभे की बात है।

दुष्यंत : तुम्हें क्यों अचंभा हुआ?

दूसरी तपस्विनी : इसलिए हुआ कि इस बालक की और तुम्हारी सूरत बहुत मिलती है और तुम्हें जाने बिना भी इसने तुम्हारी बात मान ली!

दुष्यंत : (बच्चे को गोद में उठाकर) हे तपस्विनी, जो यह ऋषिकुमार नहीं है तो किस वंश का है?

दूसरी तपस्विनी : यह पुरुवंशी है।

दुष्यंत : (स्वयं से) इसलिए इसकी सूरत मुझसे मिलती है!

(बच्चे को गोद से उतारकर) पुरुवंशियों में यह रीति तो निश्चित है कि युवा अवस्था में वे महलों मे रहकर पृथ्वी की रक्षा और पालन करते हैं और वृद्धावस्था आने पर वन में जितेन्द्रिय तपस्वियों के आश्रम में वृक्षों के नीचे कुटी बनाकर रहते हैं। देवता जैसी शक्तिवाला यह निडर और असाधारण बालक मनुष्य का पुत्र भला किस प्रकार होगा?

दूसरी तपस्विनी : हे परदेशी, तेरा यह संदेह तब मिट जाएगा, जब तू जान लेगा कि इस बालक की माँ मेनका नामक एक अप्सरा की बेटी है। उसी के प्रताप से इसका जन्म देवपितर के इस तपोवन में हुआ।

दुष्यंत : (मन में) यह तो बड़े आनंद की बात सुनाई, इससे कुछ और आशा बढ़ी। इसकी माता किस राजर्षि की पत्नी है ?

दूसरी तपस्विनी : जिस राजा ने अपनी विवाहिता स्त्री को बिना अपराध छोड़ दिया है, उसका नाम मैं न लूँगी।

दुष्यंत : (स्वयं से) यह कथा तो मुझ पर लगती है, भला, अब इस बालक की माँ का नाम पूछूँ !

(पहल तपस्विनी मिट्टी का मोर लेकर आई।)

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

पहली तपस्विनी : हे सर्वदमन, यह शकुंत लावण्य देख !

बालक : (बड़े चाव से देखकर) कहाँ है शकुंतला ? मेरी माता।

दूसरी तपस्विनी : (हँसती हुई) यहाँ तेरी माता नहीं है। तुम इस नाम से धोखा खा गए सर्वदमन ! मैंने तो कहा था मिट्टी के मोर को देख !

दुष्यंत : (स्वयं से) इसकी माँ मेरी ही प्यारी शकुंतला है या इस नाम की कोई दूसरी स्त्री है। यह वृत्तांत मुझे ऐसे व्याकुल करता है जैसे मृगतृष्णा प्यासे हिरण को व्याकुल करती है।

बालक : (खुश होकर) मुझे यह मोर बहुत अच्छा लगता है। (खिलौना ले लेता है)

पहली तपस्विनी : (घबराकर) ओह, बालक की बाँह से रक्षाबंधन कहाँ गया ?

दुष्यंत : घबराओ मत, जब यह नाहर से खेल रहा था, तब इसके हाथ से गिर गया था, सो वह पड़ा है। मैं उठाकर तुम्हें दिए देता हूँ।

(उठाने के लिए झुकता है)

पहली तपस्विनी : अरे ! अरे ! मत उठाओ। इसे मत छूना।

दूसरी तपस्विनी : ओह ! इसने तो उठा ही लिया।

(दोनों एक दूसरे को आश्चर्य से देखती हैं।)

दुष्यंत : यह लो, परंतु यह कहो कि तुमने मुझे इसको उठाने से रोका क्यों था ?

दूसरी तपस्विनी : इस रक्षाबंधन का नाम 'अपराजित' है। जिस समय इस बालक का नामकरण हुआ था, तब महात्मा मरीचि के पुत्र कश्यप ने यह धागा दिया था। इसका गुण है कि कभी यह धरती पर गिर पड़े तो इस बालक के माता-पिता को छोड़कर इसे कोई दूसरा न उठा सके।

दुष्यंत : और जो कोई उठा ले तो क्या हो ?

पहली तपस्विनी : तो यह तुरंत साँप बनकर उसे डसता है।

दुष्यंत : तुमने कभी ऐसा होते देखा है ?

पहली तपस्विनी : अनेक बार।

दुष्यंत : (प्रसन्न होकर) तो अब मेरा मनोरथ पूरा हुआ। मैं क्यों न आनंद मनाऊँ !

(बालक को गोद में ले लेता है)

(पर्दा गिरता है।)

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

शब्दार्थ

तपस्विनी तप करनेवाली स्त्री **अचंभा** हैरानी **हठीला** जिद्दी **सर्वदमन** सबका दमन करनेवाला, राजा दुष्यन्त का पुत्र भरत **उज्ज्वल** चमरका हुआ, स्वच्छ **चक्रवर्ती** सम्राट, समुद्र तक पृथ्वी को जीतने वाला **तुतले वचन** अटपटे शब्द **ढीठ** जिद्दी **आचरण** व्यवहार **बढ़भागी** बड़े भाग्यवाला **कुल** वंश **वृद्धावस्था** बुढ़ापा **जितेन्द्रिय** जिसने अपनी इन्द्रियोंको जीत लिया हो **नाहर** शेर, सिंह **देवपितर** देव और पूर्वज **विवाहिता** शादीशुदा स्त्री **परदेशी** दूरसे देश का **शकुंत लावण्य** मिट्टी का सौन्दर्य **वृत्तांत** वर्णन, हाल **मनोरथ** मन की कामना, इच्छा **ओट** आड, अवरोध

मुहावरे

बात पर कान नहीं धरना अनसुना करना, **धोखा खा जाना** सच्ची बात को न समझ पाना, मूर्ख बनना

अभ्यास

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(1) इस एकांकी के आधार पर बालक सर्वदमन की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

(2) सर्वदमन के व्यवहारों को देखकर दुष्यन्त के मन में कौन-कौन से विचार आते थे ?

2. इस एकांकी में निम्नलिखित पात्रों में अंतर्निहित मूल्य बताइए :

(1) दुष्यंत

(2) सर्वदमन

3. इस परिच्छेद को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

कृषि वैज्ञानिकों के अनुसार एक अच्छा जंगल ''जैविक भंडार घर'' होता हे। यह हजारों प्रजातियों के पौधों को उगाकर रखता है, जो बाद में चलकर बहुमूल्य हो जाते है। अगर हम जंगल को एक सीमा से भी ज्यादा छाँटते हैं या खत्म करते हैं, तो वे चीजें भी नष्ट हो जाती हैं जिनकी हमें कभी भी बहुत जरूरत हो सकती है। वह एक संभवित पौधा, खाने की औषधीय वस्तु या कोई उपयोगी चीज बनाने में इस्तेमाल होनेवाली कोई जरूरी वस्तु में से कुछ भी हो सकता है।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

प्रश्न :

(1) एक अच्छा जंगल क्या कहलाता है ?

(2) जंगल को ज्यादा छाँटने या खत्म करने से क्या नुकसान होता है ?

(3) इस परिच्छेद का उचित शीर्षक दीजिए।

(4) पर्यायवाची लिखिए :

जंगल, घर, बहुत

(5) इस परिच्छेद–आधारित दो सवाल बनाइए।

4. सोच अपनी-अपनी...

(1) आपको कौन–सा टी.वी. प्रोग्राम अच्छा लगता है ? क्यों ? दस–पन्द्रह वाक्यों में वर्णन कीजिए।

(2) कक्षा में पढ़ाई कर रहे हों और धरतीकंप आ जाए तो आप क्या करेंगे?

Q9W1T5

स्वाध्याय

1. प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

(1) ऋषियों ने बालक का नाम सर्वदमन क्यों रखा ?

(2) दुष्यंत बालक के प्रति क्यों आकृष्ट हो रहे थे ?

(3) दुष्यंत ने पुरुवंशीय जीवन की कौन-सी दो रीतियाँ बताई ?

2. चित्रों का अवलोकन करके अपने शब्दों में कहानी लिखिए।

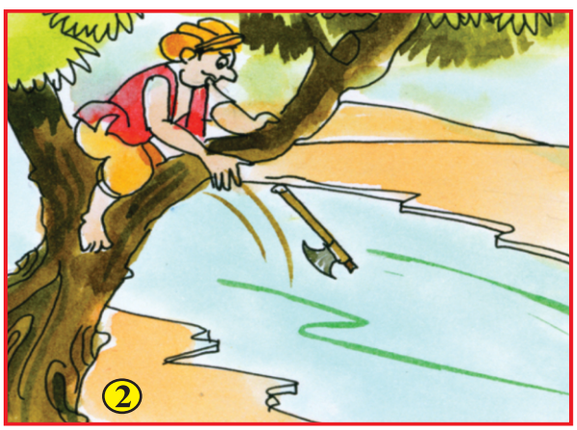

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

भाषा-सञ्जता

विशेषण

- **निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए और उनमें प्रयुक्त गाढ़े शब्दों पर ध्यान दीजिए।**

(1) सूरत **एतिहासिक** नगर है।

(2) **परिश्रमी** छात्र कभी असफल नहीं रहता।

(3) हमने बाजार से **दो लीटर** दूध खरीदा।

(4) छात्रालय में **बीस** छात्र हैं।

(5) **वे** लड़के खेल रहे हैं।

उपर्युक्त वाक्यों में ऐतिहासिक, परिश्रमी, दो लीटर, बीस आदि शब्द गुण, संख्या, मात्रा, परिमाण बताते हैं। ये सभी गाढ़े शब्द किसी न किसी रूप में वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा या सर्वनाम शब्दों की विशेषता का बोध करा रहे हैं।

''जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता (गुण, संख्या, मात्रा, परिमाण) बताते हैं, वे 'विशेषण' कहलाते हैं।''

- **आप विशेषण तथा उसके प्रकार पढ़ चुके हैं। निम्नलिखित वाक्यों में विशेषण पहचानकर उनके प्रकार लिखिए :**
  - ओम चतुर लड़का है।
  - श्याम बीस किलो आटा लाया।
  - सानिया बाजार से थोड़ी चीनी लायी।
  - साहिल के पास दस रुपए हैं।
  - कुछ लड़के उद्यान में खेल रहे हैं।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

- **निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए और रेखांकित शब्दों पर ध्यान दीजिए :**

(क) सानिया अच्छी लड़की है।

(ख) सानिया कोमल से अच्छी लड़की है।

(ग) सानिया कक्षा में सबसे अच्छी लड़की है।

उपर्युक्त वाक्यों में 'अच्छा' विशेषण का प्रयोग तीन प्रकार से किया गया है।

(क) वाक्य में केवल सानिया की विशेषता का बोध कराने के लिए।

(ख) वाक्य में सानिया और कोमल की तुलना करके सानिया को कोमल से अच्छी बताने के लिए।

(ग) वाक्य में सानिया को कक्षा में सबसे अच्छी बताने के लिए।

- उपर्युक्त विधानों से यह स्पष्ट है कि विशेषण शब्दों का प्रयोग संज्ञा या सर्वनाम शब्द की सामान्य विशेषता बताने के लिए।
- संज्ञा या सर्वनाम की विशेषताओं की तुलना करने के लिए उनमें से एक को दूसरे से कम या ज्यादा बताने के लिए।
- दो से अधिक संज्ञा या सर्वनाम की विशेषताओं की तुलना करके उनमें से किसी एक को सबसे कम या सबसे ज्यादा बताने के लिए किया जा सकता है।

निम्नलिखित विशेषणों का तीन प्रकार से वाक्य में उपयोग कीजिए :

(1) सुंदर (2) बड़ा (3) मेहनती (4) चालाक

लिंग-परिवर्तन

☞ **निम्नलिखित शब्द पढ़िए और समझिए :**

→	सुत – सुता	प्रिय – प्रिया	आचार्य – आचार्या
	भवदीय – भवदीया	छात्र – छात्रा	शिष्य – शिष्या

इस प्रकार पुल्लिंग शब्दों के अंत में 'आ' प्रत्यय जोड़ने से स्त्रीलिंग बनता है।

→	टोकरा – टोकरी	दास – दासी	सखा – सखी
	मटका – मटकी	कटोरा – कटोरी	रस्सा – रस्सी

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in

इस प्रकार पुल्लिग शब्दों के अंत में 'ई' प्रत्यय जोड़ने से स्त्रीलिंग बनता है।

➔ मोर – मोरनी शेर – शेरनी भील – भीलनी

ऊँट – ऊँटनी मजदूर – मजदूरनी सिंह – सिंहनी

इस प्रकार के पुल्लिग शब्दों के अंत में 'नी' प्रत्यय जोड़ने से स्त्रीलिंग बनता है।

➔ पुजारी – पुजारिन नाग – नागिन पड़ोसी – पड़ोसिन

साँप – साँपिन सुनार – सुनारिन माली – मालिन

इस प्रकार पुल्लिंग शब्दों के अंत में 'इन' प्रत्यय जोड़ने से स्त्रीलिंग बनता है।

➔ पंडित – पंडिताइन ठाकुर – ठकुराइन गुरु – गुरुआइन

इस प्रकार पुल्लिग शब्दों के अंत में 'आइन' प्रत्यय जोड़ने से स्त्रीलिंग बनता है।

➔ डिब्बा – डिबिया बूढ़ा – बुढ़िया

बंदर – बंदरिया कुत्ता – कुतिया

इस प्रकार पुल्लिग शब्दों के अंत में 'आ' को 'इया' करने से स्त्रीलिंग बनता है।

➔ नायक – नायिका लेखक – लेखिका

गायक – गायिका बालक – बालिका

इस प्रकार पुल्लिग शब्दों के अंत में 'अक' को 'इका' करने से स्त्रीलिंग बनता है।

☞ **इन उदाहरण के आधार पर निम्नलिखित शब्दों का लिंग परिवर्तन कीजिए :**

(1) हिरन (2) शिक्षक (3) पंडित

योग्यता-विस्तार

- पुस्तकालय से पुस्तक लेकर दुष्यंत–शकुंतला की कथा पढ़िए।
- इस एकांकी का छात्रों से नाट्यीकरण करवाइए।

Get More Learning Materials Here : CLICK HERE www.studentbro.in